उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२७७॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढवग्गमूलाणि ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२७८॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

असंजदेसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी१ (असंयतेषु सर्वत: सासादनसम्यदृष्टय: । स.सि. १,८.) ॥२७९॥

कुदो? छावलियसंचयादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा२ (सम्यग्मिथ्यादृष्टय: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥२८०॥

कुदो? संखेज्जावलियसंचयादो ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा३ (असयंतसम्यदृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥२८१॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२७७॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

संयतासंयत गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यगदृष्टि असंख्यातगुणित हैं ॥२७८॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसका कारण जानकर कहना चाहिए । (देखो सूत्र नं. २०) ।

असंयतोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे जीव सबसे कम हैं ॥२७९॥

क्योंकि, उनका संचयकाल छह आवलीमात्र है ।

असंयतोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२८०॥

क्योंकि, उनका संचयकाल संख्यात आवलीप्रमाण है ।

असंयतोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८१॥

गुणकार क्या है? आवलीका अससंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा१ (मिथ्यादृष्योऽनन्तगुणा: स.सि. १,८.) ॥२८२॥

को गुणगारो? अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो, सिध्देही वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि । कुदो? साभावियादो ।

असंजदसम्मादिदिटठटठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥२८३॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२८४॥

कुदो? वे सामगरोवम२ (मु. प्रतौ कुदो? सागरोवम-इति पाठ: ।) संचयादो । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२८५॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? साभावियादो ।

एवं संजममग्गणा समत्ता ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥२८२॥

गुणकार क्या है? अभव्यसिध्दोंसे अनन्तगुणित और सिध्दोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥२८२॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अनतर्मुहूर्त है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८४॥

क्योंकि, उनका संचयकाल दो सागरोपम है । गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

असंयतोंमें असंयतसम्यगदृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२८५॥

गुणकार क्या है? आवलिका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

इस प्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दंसाणणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं१ (दर्शनानुवादेन चक्षुर्दर्शनिनां मनोयेगिवत्।अचुक्षुर्दर्शनिनां काययोगिवतस.सि.१,८.) ॥२८६॥

जधा ओघम्हि एदेसिमप्पाबहुगं परुविदं तधा तत्थ एत्थ वि परुवेदव्वं, विसेसाभावा। विसेसापरुवणट्ठमुत्तरसुत्तंभणदि-

णवरि चक्खुदंसणीसु मिच्छादिटठी असंखेज्जगुणा ॥२८७॥

को गुणगारो? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ। कुदो? साभावियादो।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो२ (अवधिदर्शनिनामवधिज्ञानिवत्। स.सि. १,८.) ॥२८८॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो३ (केवलदर्शनिनां केवलज्ञानिवत्। स.सि. १,८.) ॥२८९॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

एवं सदंसणमग्गणा समत्ता।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा सासाणसम्मादिट्ठी१ (लेश्यानुवादेन कृष्णनील-कापोतलेश्यानां असंयतवत्। स.सि. १,८.) ॥२९०॥

सुगममेदं।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥२९१॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९२॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो? साभावियादो।

मिच्छादिटठी अणंतगुणा ॥२९३॥

को गुणगारो? अभवसिध्दिएहि अणंतगुणो, सिध्देहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वलीवरासिपढमवग्गमूलाणि।

असंजदसम्मादिटिठटठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥२९४॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि सबसे कम हैं ॥२९०॥

यह सूत्र सुगम है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥२९१॥

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२९२॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यह स्वाभाविक है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥२९३॥

गुणकार क्या है? अभव्यसिध्दोंसे अनन्तगुणित और सिध्दोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दष्टि सबसे कम हैं ॥२९४॥

कुदो? मणुसकिण्ह-णीललेस्सियसंखेज्जखइयसम्मादिट्ठिपरिग्गहादो ।

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९५॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो? णेरइएसु किण्हणीललेस्सिएसु१ (मु. प्रतौ किण्हलेस्सिएसु इति पाठः ।) पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउवसमसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ।

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवसमसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९६॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

णवरि विसेसो, काउलेस्सिएसु असंजदसम्मादिटिठटठाणे सव्वत्थोवा एवसमसम्मादिटठी ॥२९७॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९८॥

कुदो? पढमपुढविम्हि२ (मु. प्रतौ - विहिं इति पाठः ।) संचिदखइयसम्मादिटिठग्गहणादो । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

क्योंकि, यहां पर कृष्ण और नीललेश्यावाले संख्यात क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका ग्रहण किया गया है ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९६॥

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अंसख्यातगुणित हैं ॥२९५॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, कृष्ण और नील लेश्यावाले नारकियोमें पल्योपमके असंख्यांतवें भागममात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका सद्भाव पाया जाता है ।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२९६॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

केवल विशेषता यह है कि कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम है ॥२९७॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अन्तर्मुहूर्त है ।

कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२९८॥

क्योंकि, यहां पर प्रथम पृथिवीमें संचित क्षायिकसम्यदृष्टि जीवोंका ग्रहण किया गया है ।
गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥२९९॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा१ (तेजःपदमलेश्यानां सर्वतःस्तोका अप्रमत्ताः । स.सि. १,८.) ॥३००॥

कुदो? संखेज्जपरिमाणत्तादो ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा२ (प्रमत्ता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३०१॥

को गुणगारो? दो रुवाणि।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा३ (एवमितरेषां पंचेन्द्रियवत् । स.सि.१,८.) ॥३०२॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३०३॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? सोहममीसाण-सणक्कु-मारमाहिंदरासिपरिग्गहादो।

कापोतलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥२९९॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

तेजोलेश्या और पदमलेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे कम हैं ॥३००॥

क्योंकि, उनका परिमाण संख्यात है।

तेजोलेश्या और पदमलेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०१॥

गुणकार क्या है? दो रुप गुणकार है।

तेजोलेश्या और पदमलेश्यावालोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०२॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है।

तेजोलेश्या और पदमलेश्यावालोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०३॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यांतवां भाग गुणकार है, क्योंकि, यहां पर सौधर्म-ईशान और सन्तकुमार-माहेन्द्र कल्पसम्बन्धी देवराशिको ग्रहण किया गया है।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३०४॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३०५॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुबोज्झं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३०६॥

को गुणगारो? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि।

असंजदसम्मादिट्ठी-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदटठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥३०७॥

जधा ओघम्हि अप्पाबहुअमेदेसिं उत्तं सम्मत्तं पडि, तधा एत्थ सम्मत्तप्पाबहहुगं वत्तव्वमिदि वुत्तं होई।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३०४॥

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेयावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०५॥

गुणकार क्या है? आवलिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालोंमें असंयतसम्यगदृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३०६॥

गुणकार क्या है? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है? घनांगुलका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है, जो असंख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है ।

तेजोलेश्या और पदमलेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३०७॥

जिस प्रकार ओघमें इन गुणस्थानोंका सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहना चाहिए, यह अर्थ कहा गया है ।

सुक्कलेस्सिएसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा१ (शुक्ललेश्यानां सर्वत: स्तोका उपशमका: । स.सि. १,८.) ॥३०८॥

सुगममेदं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३०९॥

कुदो? चउवण्णपमाणत्तादो२ (ता.१ प्रतौ चउवण्णप्पसंगादो इति पाठ: ।) ।

खवा संखेज्जगुणा३ (क्षपका: संख्येयगुणा: । स.सि.१,८.) ॥३१०॥

अट्ठत्तरसदपरिमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३११॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥३१२॥

एदं पि सुगमं ।

सजोगिकेवली अध्दं पडुच्च संखेज्जगुणा४ (सयोगकेवलिन: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१३॥

शुक्ललेश्यावालोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३०८॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३०९॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३१०॥

क्योंकि, उनका परिमाण एक सौ आठ है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३११॥

यह सूत्र सुगम हैं ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली प्रवेशकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३१२॥

यह सुत्र सुगम हैं ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥३१३॥

को गुणगारो? ओघसिध्दो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा१ (अप्रमत्तसंयता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१४॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा२ (प्रमत्तसंयता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१५॥

को गुणगारो? दोण्णि रुवाणि।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा३ (संयतासंयता: (अ-) संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१६॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा४ (सासादनसम्यग्दृष्टय: (अ-) संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१७॥

को गुणगारो? अवलियिए असंखेज्जदिभागो।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा५ (सम्यग्मिथ्यादृष्ट: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१८॥

गुणकार क्या है? ओघमें बतलाया गया गुणकार ही यहांपर गुणकार है।

शुक्ललेश्यावालोंमें सयोगिकेवली जिनोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३१४॥

गुणकार क्या है? संयात समय गुणकार हैं।

शुक्ललेश्यावालोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३१५॥

गुणकार क्या है? दो रुप गुणकार है।

शुक्ललेश्यावालोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३१६॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यांतवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण हैं।

शुक्ललेश्यावालोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३१७॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

शुक्ललेश्यावालोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यात गुणित हैं ॥३१८॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा१ (मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३१९॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा२ (असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा: (?) । स.सि. १,८.) ॥३२०॥

आरणच्चुदरासिस्स पहाणत्तपरियप्पणादो ।

असंजदसम्मादिटिठटठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥३२१॥

कुदो? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३२२॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३२३॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३१९॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३२०॥

क्योंकि, यहांपर आरण-अच्युतकल्पसम्बन्धी देवराशिकी प्रधानता विवक्षित है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥३२१॥

क्योंकि, उनका संचयकाल अनतमुहुर्त है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यगदृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३२२॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार हे ।

शुक्ललेश्यावालोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि संख्यातगुणित हैं ॥३२३॥

क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टियोंके क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होता है (जिसकी प्राप्ति सुलभ है) ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे ससम्मत्तप्पाबहुगमोघं ॥३२४॥

जधा एदेसिमोघम्हि सम्मत्तप्पाबहुगं वुत्तं, तहा वत्तव्वं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥३२५॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥३२६॥

खवा संखेज्जगुणा ॥३२७॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं लेस्सामग्गणा१ (ता. २ प्रतौ लेस्समग्गणा इति पाठः ।) समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिध्दिएसु मिच्छाइट्ठी जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं२ (भव्यानुवादेन भव्यानां सामान्यवत् । स.सि. १,८.) ॥३२८॥

एत्थ ओघअप्पाबहुअं अणूणाहियं वत्तव्वं ।

शुक्ललेश्यावालोंमें संयतासंयत, प्रमत्तसंयत ओर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३२४॥

जिस प्रकार इन गुणस्थानोंका ओघमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहां पर भी कहना चाहिए ।

इसी प्रकार शुक्ललेश्यावालोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥३२५॥

उक्त गुणस्थानोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥३२६॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३२७॥

ये तीनों ही सूत्र सुगम हैं ।

इसी प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिध्दोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक जीवोंका अल्पबहुत्व ओघके समान हैं ॥३२८॥

यहांपर ओघसम्बन्धी अल्पबहुत्व हीनता और अधिकतासे रहित अर्थात् तत्प्रमाण ही कहना चाहिए।

अभवसिध्दिएसु अप्पाबहुअं णत्थि१ (अभव्यानां नास्त्यल्पबहुत्वम् । स.सि. १,८.) ॥३२९॥

कुदो? एगपदत्तादो ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु ओधिणाणिभंगो ॥३३०॥

जधा ओधिणाणीणमप्पाबहुगं परुविदं, तधा एत्थ परुवेदव्वं । णवरि सजोगिअजोगिपदाणि वि एत्थ अत्थि, सम्मत्तसामण्णे अहियारादो ।

खइयसम्मादिट्ठीसु तिसु अध्दासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा२ (सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु सर्वत: स्तोकाश्चत्वार उपशमका: । स.सित्र १,८.) ॥३३१॥

तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव३ (इतरेषां प्रमत्तांन्तानां सामान्यवत् । स.सि.१,८.) ॥३३२॥

सुगममेदं ।

अभव्यसिध्दोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥३२९॥

क्योंकि, उनके एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही होता है ।

इसी प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमे अल्पबहुत्व अवणिज्ञानियोंके समान हैं ॥३३०॥

जिस प्रकार ज्ञानमार्गणामें अवधिज्ञानियोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहांपर भी कहना चाहिए । विशेषता यह है कि सयोगिकेव्रली और अयोगिकेव्रली, ये दो गुणस्थानपद यहांपर होते हैं, क्योंकि, यहांपर सम्यक्त्वसामान्यका अधिकार है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३३१॥

क्योंकि, उनका तत्प्रायोग्य संख्यात प्रमाण हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें उश्पशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३३२॥

यह सूत्र सुगम है ।

खवा संखेज्जगुणा ॥३३३॥

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३३४॥

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥३३५॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥३३६॥

गुणगारो ओघसिध्दो, खइयसम्मात्तविरहिदसजोगीणभावा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥३३७॥

को गुणगारो? तप्पाओग्गसंखेज्जरुवाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥३३८॥

को गुणगारो? दो रुवाणि ।

क्षायिकसम्यदृष्टियोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३३३॥

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३३४॥

सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, ये दोनों ही प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३३५॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

सयोगिकेवली जिन संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥३३६॥

यहांपर गुणकार ओघ-कथित है, क्योंकि, क्षायिकसम्यक्त्वसे रहित सयोगिकेवली नहीं पाये जाते हैं ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अक्षपक और अनुपशापक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३३७॥

गुणकार क्या है? अप्रमत्तसंयतोंके योग्य प्रमत्तसंयत संख्यातरुप गुणकार है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३३८॥

गुणकार क्या है? दो रुप गुणकार है ।

संजदासंजदा संखेज्जगुणा१ (ततः संयतासंयताः संख्येयगुणाः । स.सि. १,८.) ॥३३९॥

मणुसगदिं मोत्तूण अण्णत्थ खइयसम्मादिटिठसंजदासंजदाणमभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा२ (असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३४०॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिटिठ-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदटठाणे खइयसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥३४१॥

एदस्स अहिप्पाओ - जेण खइयसम्मत्तस्स एदेसु गुणटठाणेसु भेदो णत्थि, तेण णत्थि सम्मत्तप्पाबहुगं, एयपयत्तादो । एसो अत्थो एदेण परुविदो होदि ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा ॥३४२॥

कुदो? तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३३९॥

क्योंकि, मनुष्यगतिको छोडकर अन्य गतियोंमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंका अभाव है ।

क्षाकियसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३४०॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंखतवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्वका भेद नहीं हैं ॥३४१॥

इस सूत्र का अभिप्राय यह है कि इन असंयतसम्यग्दृष्टि आदि चारों गुणस्थानोंमें क्षायिकसम्यक्त्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है, इसलिए उनमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उन सबमें क्षायिकसम्यक्त्वरुप एक पद ही विवक्षित है । यह अर्थ इस सूत्रके द्वारा प्ररुपित किया गया है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे कम हैं ॥३४२॥

क्योंकि, उनका तत्प्रायोग्य संख्यातरुप प्रमाण है ।

पमत्तासंजदा संखेज्जगुणा१ (प्रमत्ता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३४३॥

को गुणगारो? दो रुवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा२ (संयतासंयता: (अ-) संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३४४॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा३ (असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३४५॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिटठी-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदटठाणे वेदगसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥३४६॥

एत्थ भेदसद्दो अप्पाबहुअपज्जाओ घेत्तव्वो, सद्दाणमणेयत्थत्तादो । वेदगसम्मत्तस्स भेदो अप्पाबहुअं णत्थि त्ति उत्तं होदि ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३४३॥

गुणकार क्या है? दो रुप गुणकार है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३४४॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें यंतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३४५॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्ययग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें वेदकसम्यक्त्वका भेद नहीं है ॥३४६॥

यहांपर भेद शब्द अल्पबहुत्वका पर्यायवाचक ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, शब्दोंके अनेक अर्थ होते हैं । इस प्रकार इस सूत्र द्वारा यह अर्थ कहा गया है कि इन गुणस्थानोंमें वेदकसम्यक्त्वका भेद अर्थात् अल्पबहुत्व नहीं है ।

उवसमसम्मादिट्ठीस तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा१ (औपशिमकसम्यग्दृष्टिनां सर्वत: स्तोकाश्चत्वातर उपशमका: । स.सि. १,८.) ॥३४७॥

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३४८॥

अप्पमत्तंसजदा अणुवसमा संखेज्जगुणा२ (अप्रमत्ता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३४९॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा३ (प्रमत्ता: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३५०॥

को गुणगारो? दो रुवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा४ (संयतासंयत: (अ-) संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३५१॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा५ (असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३५२॥

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प है ।।३४७।।

उपशान्तवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही है ।।३४८।।

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंमें अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यात गुणित है ।।३४९।।

ये सूत्र सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव संख्यातगुणित है ।।३५०।।

गुणकार क्या है? दो रूप गुणकार है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित है ।।३५१।।

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयतोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित है ।।३५२।।

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिटठ-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदटठाणे उवसमसम्मतस्स भेदो णत्थि ॥३५३॥

सुगममेदं ।

सासाणसम्मादिट्ठ-सम्मामिच्छादिट्ठि-मिच्छदिट्ठीणं णत्थि अप्पाबहुअं१ (शेषाणां नास्त्यल्पबहुत्वम् विपक्षे एवैक्रगुणस्थानग्रहणात् । स.सि.१,८.) ॥३५४॥

कुदो? एगपदत्तादो ।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं२ (संज्ञानुवादेन संज्ञिनां चक्षुर्दर्शनिवत् । स.सि.१,८.) ॥३५५॥

जधा ओघम्हि अप्पाबहुगं परुविदं तधा एत्थ परुवेदव्वं, सण्णित्तं पडि उदयत्थ भेदभावा। विसेससपदुप्पायणटठमुत्तरसुत्तं भणदि-

----

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत ओर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें अपशमसम्यक्त्व अल्पबहुत्व नहीं हैं ॥३५३॥

यह सूत्र सुगम है।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५४॥

क्योंकि, तीनों प्रकारके जीवोंके एक गुणस्थानरुप ही पद है।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक जीवोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३५५॥

जिस प्रकार ओघमें इन गुणस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा है, उसी प्रकार यहां पर भी प्ररुपण करना चाहिए, क्योंकि, संज्ञित्वकी अपेक्षा दोनों स्थानोंपर कोई भेद नहीं है। अब संज्ञियोंमें संभव विशेषके प्रतिपादनके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं-

----

णवरि मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३५६॥

ओघमिदि वुत्ते अणंतगुणत्तं पत्तं, तण्णिरायणटठं असंखेज्जगुणा इदि उत्तं। गुणगारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ।

असण्णीसु णत्थि अप्पाबहुअं१ (असंज्ञिनां नास्त्यल्पबहुत्वम् ।स.सि.१,८.) ॥३५७॥

कुदो? एगपदत्तादो।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा२ (आहारनुवादेन आहारकाणां काययोगिवत्। स.सि.१,८.) ॥३५८॥

चउवण्णपमाणत्तादो।

उवसंतकसायवीदरागछगुमत्था तत्तिया चेव ॥३५९॥

सुगममेदं ।

विशेषता यह है कि संज्ञियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३५६॥

उपयुक्त सुत्रमें ओघ इस पदके कह देने पर असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे संज्ञि मिथ्यादृष्टि जीवोंके अनन्तगुणित प्राप्त होती थी, उसके निराकाणके लिए इस सुत्रमें असंख्यातगुणित है ऐसा पद कहा है। यहां पर गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है, जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीके है ।

उपयुक्त जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५७॥

क्योकि, उनमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही होता है ।

इस प्रकार संज्ञिमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें उपशामक जीव प्रवेशकी अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३५८॥

क्योंकि, उनका प्रमाण चौपन है ।

आहारकोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३५९॥

यह सूत्र सुगम है ।

खवा संखेज्जगुणा ॥३६०॥

अट्ठत्तरसदपमाणत्तादो ।

खीणकसायवीतरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥३६१॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥३६२॥

सजोगिकेवली अध्दं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥३६३॥

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥३६४॥

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥३६५॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥३६६॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३६७॥

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३६८॥

आहारकोंमें उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६०॥

क्योंकि, उनका प्रमाण एक सौ आठ है ।

आहारकोंमें क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६१॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारकोंमें सयोगिकेवली जिन प्रवेशकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६२॥

सयोगिकेवली जिन संचयकालकी अपेक्षा संख्यातगुणित हैं ॥३६३॥

सयोगिकेवली जिनोंसे अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६४॥

अप्रमत्तसंयतोंसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६५॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

आहारकोंमें प्रमत्तसंयतोंसे संयतासंयत जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६६॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

आहारकोंमें संयतासंयतोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६७॥

सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणित हैं ॥३६८॥

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३६९॥

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥३७०॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदटठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥३७१॥

एवं तिसु अद्धासु ॥३७२॥

सव्वत्थोवा उवसमा ॥३७३॥

खवा संखेज्जगुणा ॥३७४॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली१ (अनाहारकाणां सर्वत: स्तोका: सयोगिकेवलीन: । स.सि. १,८.) ॥३७५॥

कुदो? सटिठपमाणत्तादो ।

अजोगिकेवली संखेज्जगुणा२ (अयोगिकेवलीन: संख्येयगुणा: । स.सि. १,८.)

कुदो? दुरुऊणछस्सदपमाणत्तादो ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३६९॥

असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥३७०॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

आहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान हैं ॥३७१॥

इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानोंमें सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्पबहुत्व ओघके समान है ॥३७२॥

उक्त गुणस्थानोंमें उपशामक जीव सबसे कम हैं ॥३७३॥

उपशामकोंसे क्षपक जीव संख्यातगुणित हैं ॥३७४॥

ये सूत्र सुगम है ।

अनहारकोंमें सयोगिकेवली जिन सबसे कम हैं ॥३७५॥

क्योंकि, उनका प्रमाण साठ है ।

अनाहारकोंमें अयोगिकेवली जिन संख्यातगुणित हैं ॥३७६॥

क्योंकि, उनका प्रमाण दो कम छह सौ अर्थात् पांच सौ अठयानवे (५९८) है ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा१ (सासादनसम्यग्दृष्टियोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३७७॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा२ (असंयतसम्यग्दृष्टयोऽसंख्येयगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३७८॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिटठी अणंतगुणा३ (मिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणा: । स.सि. १,८.) ॥३७९॥

को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेही वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वज्जीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिटठी ॥३८०॥

कुदो? संखेज्जजीवपमाणत्तादो ।

अनाहारकोंमें अयोगिकेवली जिनोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३७७॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

अनाहारकोंमें सासादनसमयग्दृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३७८॥

गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणित हैं ॥३७९॥

गुणकार क्या है? अभव्यसिध्दोंसे अनन्तगुणित, सिध्दोंसे भी अनन्तगुणित राशि गुणकार है, जो सर्व जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे कम हैं ॥३८०॥

क्योंकि, अनाहारक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण संख्यात है ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥३८१॥

को गुणगारो? संखेज्जगुणा ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥३८२॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमस्स पढमवग्गमूलाणि ।

(एवं आहारमग्गणा समत्ता ।)

एवमप्पाबहुगाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३८१॥

गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है।

अनाहारकोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणित हैं ॥३८२॥

गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई।)

इस प्रकार अल्पबहुत्वानुगम नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।